e-ISSN:2582-7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 7, Issue 6, June 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.521

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 6, June 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0706113 |

अरस्तु

Mahendra Kumar Singaria Regar

Department of Political Science, Acharya Shri Mahapragya Institute of Excellence, Asind, Bhilwara, Rajasthan, India

सार: अरस्तु (यूनानी: Ἀριστοτέλης, अरीस्तोतेलीस्, 384 ईपू – 322 ईपू) प्राचीन यूनानी दार्शनिक और बहुश्रुत थे। उनका जन्म स्टेगेरिया नामक नगर में हुआ था और वे प्लेटो के शिष्य और सिकंदर के गुरु थे। उनके लेखन में प्राकृतिक विज्ञान, दर्शन, भाषाविज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति, मनोविज्ञान, सौंदर्यशास्त्र और कला जैसे विषयों का एक विस्तृत परिक्षेत्र शामिल है । एथेंस के लाइसियम में दर्शनशास्त्र के परिव्राजक-संप्रदाय के संस्थापक के रूप में उन्होंने एक व्यापक अरस्तुवादी परंपरा की शुरुआत की, जिसने आधुनिक विज्ञान के विकास के लिए आधार तैयार किया ।

I. परिचय

अरस्तुके जीवन के बारे में बहुत कम जानकारी है। उनका जन्म श्रेण्य काल के दौरान उत्तरी ग्रीस के स्टैगिरा नगर में हुआ था । जब अरस्तुबच्चे थे, तब उनके पिता निकोमेकस की मृत्यु हो गई और उसका पालन-पोषण एक अभिभावक द्वारा किया गया। सत्रह या अठारह साल की उम्र में वह एथेंस में प्लेटो की अकादमी में शामिल हो गए और सैंतीस साल की उम्र (लगभग 347 ईसा पूर्व) तक वहीं रहे। प्लेटो की मृत्यु के कुछ ही समय बाद, अरस्तुने एथेंस छोड़ दिया और, मैकेदोन के फिलिप द्वितीय के अनुरोध पर , 343 ईसा पूर्व में उनके बेटे सिकंदर महान को पढ़ाया । उन्होंने लाइसियम में एक पुस्तकालय की स्थापना की जिससे उन्हें पेपाइरस पत्रावलीयों पर अपनी सैकड़ों पुस्तकों का उत्पादन करने में मदद मिली।

हालाँकि अरस्तुने प्रकाशन के लिए कई महान ग्रंथ और संवाद लिखे, लेकिन उनके मूल निष्पाद का केवल एक तिहाई ही बचा है , जिसमें से कोई भी प्रकाशन के लिए नहीं था। अरस्तुने अपने से पहले मौजूद विभिन्न दर्शनों का एक जटिल संश्लेषण प्रदान किया। सबसे बढ़कर, यह उनकी शिक्षाओं से ही था कि पश्चिम को अपनी बौद्धिक शब्दावली (कोश) , साथ ही समस्याएं और अन्वीक्षण की विधियाँ विरासत में मिल सकी। परिणामस्वरूप, उनके दर्शन ने पश्चिम में ज्ञान के लगभग हर रूप पर अद्वितीय प्रभाव डाला है और यह समकालीन दार्शनिक चर्चा का विषय बना हुआ है।[1,2]

अरस्तुके विचारों ने मध्ययुगीन विद्वता को गहराई से आकार दिया । इनके भौतिक विज्ञान के प्रभाव ने प्राचीन काल के अंत और प्रारंभिक मध्य युग से लेकर पुनर्जागरण तक विस्तार किया , और इसे तब तक व्यवस्थित रूप से प्रतिस्थापित नहीं किया गया जब तक कि ज्ञानोदय और चीरसम्मत यांत्रिकी जैसे सिद्धांत विकसित नहीं हो गए। अंतिम रूप से न्यूटन के भौतिकवाद ने इसकी जगह ले लिया। अरस्तुके जीव विज्ञान में पाए गए कुछ प्राणीशास्त्रीय अवलोकन , जैसे कि ऑक्टोपस की निषेचनांग (प्रजनन) भुजा पर , 19वीं शताब्दी तक अविश्वास किया गया था।[1] उन्होंने मध्य युग के दौरान यहूदी-इस्लामी दर्शन के साथ ईसाई धर्ममीमांसा को भी प्रभावित किया , विशेष रूप से प्रारंभिक चर्च के नवप्लेटोवाद और कैथोलिक चर्च की पांडित्यवाद परंपरा को । मध्ययुगीन मुस्लिम विद्वानों के बीच अरस्तुको "प्रथम शिक्षक" के रूप में और थॉमस एक्विनास जैसे मध्ययुगीन ईसाइयों के बीच उन्हें "दार्शनिक (द फिलॉस्फर)" के रूप में सम्मानित किया गया था, जबकि कवि दांते ने उन्हें "उन लोगों का गुरु कहा था जो जानते हैं"। उनके कार्यों में तर्क का सबसे पहला ज्ञात औपचारिक अध्ययन शामिल है, और इसका अध्ययन पीटर एबेलार्ड और जॉन बुरिडन जैसे मध्ययुगीन विद्वानों द्वारा किया गया । तर्कशास्त्र पर अरस्तुका प्रभाव 19वीं शताब्दी तक जारी रहा और ये आज भी प्रासांगिक हैं।। इसके अलावा, उनका नीतिशास्त्र, जो हमेशा से प्रभावशाली रहा, लेकिन सद्गुण नैतिकता के आधुनिक आगमन के साथ हालांकि इसमें नए सिरे से रूचि पैदा हुई है। अरस्तु का राजनीतिक दर्शन पर प्रसिद्ध ग्रंथ पोलिटिक्स व काव्यशास्त्र पर पोएटिक्स् नामक ग्रंथ है जो सौंदर्यशास्त्र की एक महत्त्वपूर्ण रचना है।[2] अरस्तु ने जन्तु इतिहास नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में लगभग 500 प्रकार के विविध जन्तुओं की रचना, स्वभाव, वर्गीकरण, जनन आदि का व्यापक वर्णन किया गया।[उद्धरण चाहिए]

जन्म

अरस्तु का जन्म 384-322 ई. पू. में हुआ था और वह ६२ वर्ष तक जीवित रहे। उनका जन्म स्थान स्तागिरा (स्तागिरस) नामक नगर था। उनके पिता मकदूनिया के राजा के दरबार में शाही वैद्य थे। इस प्रकार अरस्तु के जीवन पर मकदूनिया के दरबार का काफी गहरा प्रभाव पड़ा था। उनके पिता की मौत उनके बचपन में ही हो गई थी।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 6, June 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0706113 |

शिक्षा

पिता की मौत के बाद 18वर्षीय अरस्तु को उनके अभिभावक ने शिक्षा पूरी करने के लिए बौद्धिक शिक्षा केंद्र एथेंस भेज दिया। वह वहां पर बीस वर्षो तक प्लेटो से शिक्षा पाते रहे। पढ़ाई के अंतिम वर्षो में वो स्वयं अकादमी में पढ़ाने लगे। उनके द्वारा द लायिसियम नामक संस्था भी खोली गई |अरस्तु को उस समय का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति माना जाता था जिसके प्रशंसा स्वयं उनके गुरु भी करते थे।

अरस्तु की गिनती उन महान दार्शनिकों में होती है जो पहले इस तरह के व्यक्ति [3,4]थे और परम्पराओं पर भरोसा न कर किसी भी घटना की जाँच के बाद ही किसी नतीजे पर पहुंचते थे।

प्लेटो के निधन के बाद

347 ईस्वी पूर्व में प्लेटो के निधन के बाद अरस्तु ही अकादमी के नेतृत्व के अधिकारी थे किन्तु प्लेटो की शिक्षाओं से अलग होने के कारण उन्हें यह अवसर नहीं दिया गया। एत्रानियस के मित्र शासक ह्रमियाज के निमंत्रण पर अरस्तु उनके दरबार में चले गये। वो वहाँ पर तीन वर्ष रहे और इस दौरान उन्होंने राजा की भतीजी ह्रपिलिस नामक महिला से विवाह कर लिया। अरस्तु की ये दुसरी पत्नी थी उससे पहले उन्होंने पिथियस नामक महिला से विवाह किया था जिसके मौत के बाद उन्होंने दूसरा विवाह किया था। इसके बाद उनके यहाँ नेकोमैक्स नामक पुत्र का जन्म हुआ। सबसे ताज्जुब की बात ये है कि अरस्तु के पिता और पुत्र का नाम एक ही था। शायद अरस्तु अपने पिता को बहुत प्रेम करते थे इसी वजह से उनकी याद में उन्होंने अपने पुत्र का नाम भी वही रखा था।

सिकंदर की शिक्षा

मकदूनिया के राजा फिलिप के निमन्त्रण पर वो उनके तेरह वर्षीय पुत्र को पढ़ाने लगे। पिता-पुत्र दोनों ही अरस्तु को बड़ा सम्मान देते थे। लोग यहाँ तक कहते थे कि अरस्तु को शाही दरबार से काफी धन मिलता है और हजारों गुलाम उनकी सेवा में रहते है हालांकि ये सब बातें निराधार थीं। एलेक्जैंडर के राजा बनने के बाद अरस्तु का काम खत्म हो गया और वो वापस एथेंस आ गये। अरस्तु ने प्लेटोनिक स्कूल और प्लेटोवाद की स्थापना की। अरस्तु अक्सर प्रवचन देते समय टहलते रहते थे इसलिए कुछ समय बाद उनके अनुयायी पेरीपेटेटिक्स कहलाने लगे।[5,6]

अरस्तु और दर्शन

अरस्तु को खोज करना बड़ा अच्छा लगता था खासकर ऐसे विषयों पर जो मानव स्वभाव से जुड़े हों जैसे कि "आदमी को जब भी समस्या आती है वो किस तरह से इनका सामना करता है?" और "आदमी का दिमाग किस तरह से काम करता है?" समाज को लोगों से जोड़े रखने के लिए काम करने वाले प्रशासन में क्या ऐसा होना चाहिए जो सर्वदा उचित तरीके से काम करें। ऐसे प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए अरस्तु अपने आस पास के माहौल पर प्रायोगिक रुख रखते हुए बड़े इत्मिनान के साथ काम करते रहते थे। वो अपने शिष्यों को सुबह सुबह विस्तृत रूप से और शाम को आम लोगों को साधारण भाषा में प्रवचन देते थे।

एलेक्सेंडर की अचानक मृत्यु पर मकदूनिया के विरोध के स्वर उठ खड़े हुए। उन पर नास्तिकता का भी आरोप लगाया गया। वो दंड से बचने के लिये चल्सिस चले गये और वहीं पर एलेक्सेंडर की मौत के एक साल बाद 62 वर्ष की उम्र में उनकी मृत्यु हो गयी। इस तरह अरस्तु महान दार्शनिक प्लेटो के शिष्य और सिकन्दर के गुरु बनकर इतिहास के पन्नो में महान दार्शनिक के रूप में अमर हो गये।

कृतियां

अरस्तु ने कई ग्रथों की रचना की थी, लेकिन इनमें से कुछ ही अब तक सुरक्षित रह पाये हैं।

II. विचार-विमर्श

अरस्तु यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक थे। आज भी जो लोग अरस्तु के विचारों को जीवन में उतार लेते हैं, उनकी सभी दिक्कतें दूर हो सकती हैं। अरस्तु का जन्म 384 ईसा पूर्व हुआ था। अरस्तु ने भौतिक, आध्यात्म, कविता, नाटक, संगीत, राजनीति, नीतिशास्त्र आदि विषयों कई ग्रंथ लिखे थे। अरस्तु के गुरु प्लेटो थे और सम्राट सिकंदर अरस्तु का शिष्य था। जानिए अरस्तु की कुछ खास बातें, जो हमारी परेशानियां दूर कर सकती हैं.

कैथार्सिस या विरेचन सिद्धान्त के प्रतिपादक ग्रीस के दार्शनिक और वैज्ञानिक अरस्तुहैं। अरस्तुप्लेटो के सबसे योग्य और प्रिय शिष्य माने जाते हैं। कहा जाता है कि अरस्तुकी प्रतिभा से प्रभावित होकर प्लेटो ने कहा था कि "मेरे विद्यापीठ के दो भाग हैं– एक है शरीर और दूसरा मस्तिष्क। मेरे अन्य सभी छात्र शरीर हैं और अरस्तुमस्तिष्क है।" (पाश्चात्य काव्यशास्त्र– देवेन्द्रनाथ शर्मा, पृ.20)

अरस्तुने काव्य और नाटक से जुड़े हुए कई सिद्धान्त दिये।[7,8] अपने गुरु प्लेटो के कई सिद्धान्तों में संशोधन भी किया। अरस्तुकी कृतियाँ यूनानी (ग्रीक) भाषा में हैं। यूनानी भाषा के बहुत सारे शब्दों की अर्थवत्ता या अर्थछटा अंग्रेजी में यथावत व्यक्त नहीं हो पाती। उदाहरण के रूप में 'मिमेसिस' शब्द को देखा जा सकता है। अंग्रेजी में अनूदित होने पर इसे 'इमिटेशन' कहते हैं। लेकिन विद्वानों

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 6, June 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0706113 |

का मानना है कि यह 'मिमेसिस' का सटीक अनुवाद नहीं है। यूनानी शब्द 'मिमेसिस' के भाव अंग्रेजी का यह शब्द ठीक व्यक्त नहीं कर पाता।

काव्यशास्त्र से जुड़े अरस्तुके सिद्धान्तों में काव्य और अनुकरण, त्रासदी की अवधारणा और विरेचन का सिद्धान्त प्रमुख है। सर्वप्रथम अरस्तुने ही त्रासदी का विशद विवेचन किया। अरस्तुके अनुसार विरेचन अर्थात् भावों का शुद्धिकरण किसी भी त्रासदी का उद्देश्य होता है। अरस्तुका मानना था कि स्वास्थ्य के लिए जिस प्रकार शारीरिक मल का निष्कासन और शोधन जरूरी है, उसी प्रकार मानसिक मल का निष्कासन-शोधन भी आवश्यक है। मनुष्य के मन में जो विविध भाव होते हैं, जैसे ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, मोह, क्रोध, क्रूरता आदि, ये मानसिक विकार भी मनुष्य को मानसिक रूप से अस्वस्थ कर देते हैं। स्वस्थ रहने के लिए इन मनोभावों की मात्रा का सन्तुलन भी जरूरी होता है।

अरस्तुने विरेचन का सिद्धान्त चिकित्साशास्त्र से ग्रहण किया था। विरेचन भारतीय चिकित्सा-पद्धति आयुर्वेद का एक पारिभाषिक शब्द है और 'कैथार्सिस' यूनानी चिकित्साशास्त्र का एक पारिभाषिक शब्द है। अरस्तुने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ पोइटिक्स में त्रासदी के सन्दर्भ में विरेचन का जिक्र किया है। विरेचन का सामान्य अर्थ होता है भावों का शुद्धिकरण। हिन्दी में इसका अनुवाद रेचन, विरेचन तथा परिष्करण शब्दों के रूप में किया गया है। इनमें विरेचन शब्द सर्वाधिक प्रचलित है।

अरस्तु(384 ई.पू.- 322 ई.पू.) का जन्म मकदूनिया के स्तगिरा नामक शहर में हुआ था। उनके पिता यूनानी सम्राट फिलिप के राजवैद्य थे। उन्होंने शारीरिक कष्टों के [9,10]निवारण के लिए औषधि द्वारा विकारों को उभारकर उनका शमन होते देखा था। संभवतः विरेचन के सिद्धान्त की प्रेरणा अरस्तुने अपने पिता से प्रभावित हो कर ही ली थी। अरस्तुका लालन-पालन सुसंस्कृत, सम्पन्न और अभिजात परिवेश में हुआ था। विद्वानों का मानना है कि उनकी इस परवरिश की छाप उनके व्यक्तित्व पर भी पड़ी। उन्हें शारीरिक सुख-सुविधा के अवसर तो मिले ही, साथ ही साथ एक प्रकार का मानसिक अनुशासन भी मिला। शायद इसीलिए प्लेटो के विद्यापीठ में उनकी प्रतिभा के साथ उनका आभिजात्य भी चर्चा के केन्द्र में रहा।

माना जाता है कि यूनान की प्रगति के पीछे अरस्तुऔर उनके ज्ञान का बहुत बड़ा योगदान था। उन्होंने दर्शनशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, काव्यशास्त्र और भाषणशास्त्र आदि पर समान अधिकार दिखाया। इसी के साथ ही भौतिकविज्ञान, जीवविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, मनोविज्ञान आदि विधाओं में उनकी जानकारी का लोहा दुनिया मानती है। स्वयं अरस्तुका मानना था कि मनुष्य को 'ज्ञान की सभी शाखाओं में अबाध गति' से चलना चाहिए। कहना न होगा कि अपने कथन को उन्होंने अपने ऊपर लागू करके दिखाया।

कहा जाता है कि उन्होंने करीब चार सौ ग्रन्थ लिखे है। दुर्भाग्य से उनके अधिकतर ग्रन्थ आज उपलब्ध नहीं हैं। उनके प्रसिद्धतम ग्रन्थ का यूनानी नाम 'पेरि पोएतिकेस' है। इसका अंग्रेज़ी रूपान्तर है ऑन पोइटिक्स किन्तु वह केवल पोएटिक्स नाम से प्रसिद्द है। एक हजार से भी अधिक वर्षों के बाद पेरि पोएतिकेस विस्मृति के गर्भ से निकल कर विद्वानों के सामने आया।
पेरि पोएतिकेस लगभग पचास पृष्ठों की छोटी-सी पुस्तक है। इसमें 26 अध्याय हैं। अरस्तुमुख्य रूप से तर्क प्रवण दार्शनिक हैं। पोएटिक्स में विरेचन का उल्लेख मात्र है, उसका थोड़ा स्पष्टीकरण राजनीति शास्त्र में मिलता है। यूनानी पद 'कैथार्सिस' के लिए हिन्दी में 'विरेचन' पद प्रचलित है। कुछ विद्वान इसके लिए 'शुद्धिकरण' पद का भी प्रयोग करते हैं। जिस तरह आयुर्वेद में 'विरेचन' एक पारिभाषिक शब्द माना जाता है, उसी प्रकार यूनानी चिकित्साशास्त्र में 'विरेचन' भी एक पारिभाषिक शब्द है। चिकित्सा शास्त्र में इसका अर्थ है – रेचक औषधियों द्वारा शरीर के अनावश्यक अस्वास्थ्यकर पदार्थ को बाहर निकालना। अरस्तुने चिकित्साशास्त्र के एक शब्द को सौन्दर्यशास्त्र के एक अर्थगर्भित स्थायी उपकरण के रूप में परिणत कर दिया।

आयुर्वेद के अनुसार मनुष्य के शरीर में तीन दोष होते हैं– वात, पित्त और कफ। शरीर में जब तक इनका अनुपात प्राकृतिक रूप से ठीक रहता है, तब तक मनुष्य का शरीर भी स्वस्थ रहता है। इनका अनुपात जब बिगड़ जाता है, तब मनुष्य का स्वास्थ्य भी बिगड़ने लगता है। इस प्रकार शरीर में रोग अपना घर बनाने लगते हैं। शरीर के रोग को दूर करने के लिए वात, पित्त और कफ को फिर से अनुपात में लाना बहुत ही आवश्यक होता है।

शरीर में संचित दोष को निकालने के लिए हमेशा औषधि ही पर्याप्त नहीं होती। कभी-कभी औषधि के साथ कुछ शारीरिक क्रियाएं भी रोगी को करनी पड़ती हैं। या यूँ कहें कि आयुर्वेदाचार्य रोगी के शरीर को कुछ क्रियाएँ करने के लिए बाध्य करते हैं। ये क्रियाएँ कई प्रकार की हो सकती हैं। अतः इनका पारिभाषिक नाम भी अलग-अलग है। इन्हीं में से एक क्रिया वमन (कै) कहलाती है। मनुष्य के अमाशय में संचित मल के निष्कासन के लिए रोगी से 'वमन' की क्रिया करवाई जाती है। इसी तरह पेट में संचित मल को निकालने के लिए रोगी से विरेचन (दस्त) की क्रिया करवाई जाती है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 6, June 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0706113 |

विरेचन मल-निष्कासन द्वारा शरीर-शोधन तथा त्रिविध दोषों में साम्यावस्था के निष्पादन की अन्यतम प्रक्रिया या विधि को कहते हैं। इसकी सहायता से अतिरिक्त तथा व्याधिकारक मल शरीर से बाहर निकल जाता है। मल के निकलने से शरीर फिर से अपना सन्तुलन प्राप्त करने लगता है। इस प्रकार रोगी की व्याधि मिटने लगती है और धीरे-धीरे उसका शरीर स्वस्थ होने लगता है।

स्वास्थय के लिए जिस प्रकार शरीर के मल-मूत्र का शरीर से बाहर निकलना जरूरी है, उसी प्रकार मन के स्वास्थ्य के लिए मानसिक मल का निष्कासन और शोधन भी जरूरी है। ईर्ष्या, द्वेष, लोभ क्रोध, मोह, क्रूरता, अहंकार आदि मानसिक मल भी मनुष्य को मानसिक रूप से अस्वस्थ बना देते हैं। मनुष्य के मन में इनकी मात्रा में भी सन्तुलन जरूरी होता है। साहित्य यही काम करता है।

आयुर्वेद में विरेचन शब्द का प्रयोग शारीरिक मल के शोधन के लिए ही रूढ़ है। धीरे-धीरे इस शब्द का अर्थ विस्तार भी हुआ है। साहित्य में इसका व्यवहार भाव-शोधन के लिए भी किया जाने लगा है। इसीलिए अरस्तुके 'कैथार्सिस' के अनुवाद के रूप में इसे हिन्दी में प्रचलित किया गया है।

इस शब्द पर पश्चिम में बहुत विवाद हुए हैं। विद्वानों में मतभेद देखने को मिले हैं। इस शब्द की धार्मिक, नैतिक, मानसिक आदि कई प्रकार की व्याख्याएँ हुई हैं।[8,9,10]

'कैथार्सिस' या विरेचन मूलतः अरस्तुद्वारा दिया गया शब्द नहीं है। यह बहुत ही पुराना शब्द है। प्लेटो ने भी अपने चिन्तन में इस शब्द का व्यवहार किया है। अरस्तुने इसमें एक नया अर्थ भरने की कोशिश की है। नये सन्दर्भ में इस शब्द की भंगिमा और भाव भी बदल गये हैं। 'कैथार्सिस' या विरेचन शब्द अरस्तुके पोइटिक्स में सिर्फ एक बार ही आया है। इस शब्द का प्रयोग अरस्तुने त्रासदी के प्रभाव के प्रसंग में किया है।

पोइटिक्स के छठे अध्याय के आरम्भ में अरस्तुने त्रासदी की परिभाषा देते हुए लिखा है, "त्रासदी किसी गम्भीर, स्वतःपूर्ण तथा निश्चित आयाम से युक्त कार्य की अनुकृति का नाम है– जिसमें करुणा तथा त्रास के उद्रेक द्वारा मनोविकारों का उचित विरेचन किया जाता है।" (पाश्चात्य साहित्य-चिन्तन – निर्मला जैन, पृ. 59)

अरस्तुने विरेचन शब्द की अलग से कोई व्याख्या नहीं की है। अतः विभिन्न भाष्यकारों ने इस शब्द की अलग-अलग व्याख्या की है। लम्बे समय तक यह माना जाता रहा कि भावों के विरेचन अथवा शोधन के द्वारा त्रासदी अथवा दुखान्तक नैतिक प्रभाव उत्पन्न करता है।

विरेचन शब्द का प्रयोग अरस्तुने मूलतः दो अर्थों में किया है। पहला, त्रासदी विवेचन के प्रसंग में। इसमें उन्होंने कहा है कि त्रासदी भय और करुणा के भावों का विरेचन तभी पूरा करती है जब-

- उसमें औदात्यपूर्ण गम्भीर कार्यों का अनुकरण हो।
- उसके विविध भागों में आनन्दप्रद भाषा का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया हो।
- अनुकरण अभिनय या कार्य के रूप में हो।
- उसमें भय और करुणा को उत्तेजित करनेवाली ऐसी घटनाओं का समावेश हो, जिनसे इन भावों का विरेचन सम्पन्न हो सके।

विरेचन का दूसरा उल्लेख अरस्तुने अपने ग्रन्थ पॉलिटिक्स में करते हुए कहा है कि धार्मिक उन्माद के नृत्य और संगीत के द्वारा भी भावों का विरेचन होता है।

III. परिणाम

काव्यशास्त्र में विरेचन की चर्चा न तो नैतिक अर्थ में हुई है न धार्मिक अर्थ में। वहाँ का सन्दर्भ मानसिक या भावात्मक है, साथ ही कलात्मक भी। अरस्तुने त्रासदी का उपयोग मनोविकारों की शुद्धि के लिए किया तथा त्रासदी को एक मनोवैज्ञानिक औषधि की तरह मान्यता दी। अरस्तुकी यह धारणा है कि त्रासदी के सम्पर्क से विरोधी भाव नष्ट हो जाते हैं और क्षुब्ध भावों में सन्तुलन स्थापित होता है। उनके परिष्कार से आनन्द मिलता है। अरस्तुबताते हैं कि त्रासदी भावों की शुद्धता और परिष्कार से व्यक्ति और समाज में नैतिक प्रभाव उत्पन्न करती है।

त्रासदी दुःख की कथा होती है, किन्तु वह केवल दुःख कथा नहीं है। उस दुःख के साथ कुछ ऐसे प्रसंग जुड़े होते हैं जिसका आभास या स्वप्न में भी जिसकी कल्पना त्रासदी नायक को नहीं होती। संकटकाल में विपत्ति उन लोगों द्वारा लायी गई हो जो परम विश्वासपात्र हों, निकट सम्बन्धी हों या मित्र हों, जिनपर त्रासदी नायक का अगाध विश्वास हो कि वे ऐसा नहीं कर सकते। ऐसे में जो विस्मय या आश्चर्य का भाव उत्पन्न हो अर्थात जो नहीं होना चाहिए वह घटित हो रहा है, महान त्रासदी एवं त्रासदी नायक उसी भाव से जन्म लेते हैं। आज भी शेक्सपीयर के नाटक जुलियस सीजर में छुरे के अन्तिम प्राणलेवा प्रहार पर सीज़र की यह उक्ति मुहावरे के रूप में

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 6, June 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0706113 |

दुहराई जाती है, 'दाऊ टू ब्रूटे', अथवा यू टू ब्रूटस ! यद्यपि ब्रुट्स सीज़र का परम मित्र था। इस वाक्यखण्ड में आश्चर्य भी है और विस्मय भी। साथ ही, मित्रता पर सीज़र के अन्धविश्वास की चारित्रिक कमजोरी भी है, जिसे सीज़र जीवनपर्यन्त नहीं समझता और जब समझने का मौका आता है तब तक पानी सिर के ऊपर से गुजर चुका होता है।

सामान्यतः शत्रु विपत्ति उत्पन्न करते हैं। जहाँ मित्र विपत्ति उत्पन्न करते हैं, वहाँ हमारा विस्मित हो जाना स्वाभाविक है। भय और करुणा के प्रसार के लिए इससे बेहतर प्रसंग नहीं हो सकता। संक्षेप में, त्रासदी किसी श्रेष्ठ नायक द्वारा ऐसे कार्य का सम्पादन है जो उसे अप्रत्याशित घटनाओं में डालती हुई अन्ततः अनेपक्षित अन्त की ओर ले जाती है, जहाँ वह अपने किए पर न [7,8,9]पछता सकता है, न उसे सुधार सकता है। इस विपत्ति के बीज नायक के चरित्र के एक दोष में निहित होते है। बीज रूप में निहित यह दोष नायक को बराबर अग्रेषित करता है। उसके विनाश पर भाग्य भी हँसता है। ऐसे समय पर वह अनजाने में वह सब कुछ बोलता है जो दर्शकों को उसके अन्त की सूचना देते हैं। मसलन, जूलियस सीज़र नाटक में सीज़र कहता है, 'खतरा जानता है, सीज़र का ख़तरा ख़तरे से अधिक खतरनाक है'। यह अतिशय आत्मविश्वास ही उसे ले डूबता है। भाग्य उस पर हँसता है। यह हँसी भय और करुणा से भावों को प्रक्षालित करती है।

इसलिए अरस्तुने इस बात पर जोर दिया कि त्रासदीकार को नैतिकता और शिक्षा का प्रसार अव्यक्त रूप से करना चाहिए। अनैतिक स्थल अपने पूर्ण सन्दर्भ में ही सार्थक हैं। कवि न तो खुल्लम-खुल्ला नैतिक आदर्शों का प्रचारक हो सकता है और न आध्यात्मिक विचारों का प्रवर्तक ही। नैतिकता-अनैतिकता को काव्य में मूर्त्त परिस्थितियों के माध्यम से सामने आना होगा।
अरस्तुने सबसे पहले विरेचन की कलात्मक व्याख्या की। इस शब्द को नया अर्थ देकर काव्य और कला के क्षेत्र में लागू किया। प्लेटो ने विरेचन या 'कैथार्सिस' की व्याख्या करते हुए कहा था कि 'सभी सुख-दुखमयी वासनाओं का विरेचन या शुद्धिकरण ही वास्तव में सत्य है।' इसी को आधार बनाकर अरस्तुने विरेचन की अपनी व्याख्या प्रस्तुत की।

अरस्तुके अनुसार, कविता और नाटक में जिन भावनाओं और वासनाओं का चित्रण होता है, मंच पर प्रदर्शन होता है, वे मनुष्य के भीतर स्वार्थ और अहंभाव से भरी हुई हानिकारक भावनाएँ नहीं रह जाती हैं। कलात्मक अभिव्यक्ति से विरेचित हो जाने के कारण इन भावनाओं और वासनाओं का उदात्तीकरण और शुद्धिकरण हो जाता है।

विरेचन की कलापरक व्याख्या करनेवाले विद्वानों में सबसे प्रमुख बुचर हैं। ये अरस्तुके पोइटिक्स के प्रसिद्ध भाष्यकार भी हैं। बुचर का मानना है कि "वास्तविक जीवन में करुणा और भय के भाव दूषित और कष्टप्रद तत्त्वों से युक्त रहते हैं। दुखान्तकीय उत्तेजना में दूषित अंश के निकल जाने से वे कष्टप्रद के बदले आनन्दप्रद बन जाते हैं। बल्कि यों कहें कि वे भाव स्वयं ही शोधित अथवा विरेचित हो जाते हैं। इस दृष्टि से दुखान्तक का कार्य केवल करुणा और भय का निर्गम मार्ग तैयार करना ही नहीं है, बल्कि उन्हें कलात्मक संतुष्टि का स्पष्ट साधन भी बनाना है, उन्हें कला के माध्यम के बीच से पार कर शुद्ध और स्वच्छ भी बनाना है।" (पाश्चात्य काव्यशास्त्र – देवेन्द्रनाथ शर्मा, पृ.57)

डॉ. नगेन्द्र ने इस व्याख्या पर विचार करते हुए लिखा है कि विरेचन की प्रक्रिया के दो पक्ष होते हैं। पहला अभावात्मक और दूसरा भावात्मक। करुणा और त्रास का उद्रेक और उनके शमन से निष्पन्न मानसिक सन्तुलन विरेचन का अभावात्मक यानी पूर्व पक्ष है। डॉ. नगेन्द्र के अनुसार अरस्तुने विरेचन का जिस अर्थ में प्रयोग किया है उसमें उसकी अभावात्मक व्याख्या तो मिलती है, किन्तु भावात्मक पक्ष की ठीक-ठीक व्याख्या नहीं मिलती है।

अरस्तुके काव्यशास्त्र के अनुवाद की भूमिका में गिलबर्ट मरे ने यह जानकारी दी है कि रोम में यूनानी त्रासदी का प्रयोग कलात्मक अभिरुचि के लिए नहीं, बल्कि एक धार्मिक अंधविश्वास के रूप में, महामारी के निवारण के लिए हुआ था। अरस्तुने खुद भी एक धार्मिक प्रक्रिया का उल्लेख किया है। अरस्तुने धार्मिक विरेचन का उल्लेख अपने राजनीतिशास्त्र (5/8) में किया है। उनका कहना है कि कभी कोई किसी देवता द्वारा आविष्ट हो जाता था। उस स्थिति में वह जो कुछ भी करता था, वह क्षम्य माना जाता था। उस समय तीव्र संगीत के माध्यम से ऐसे आदमी के आवेश को चरम पर पहुंचाकर शान्त किया जाता था। इस प्रसंग में अरस्तुने संगीत के विरेचक प्रभाव की चर्चा की है। उन्होंने संगीत के तीन प्रभावों का उल्लेख किया है। एक वह जो नैतिक प्रभाव या शैक्षिक मूल्य उत्पन्न करता है। दूसरा वह जो आनन्द उत्पन्न करता है। तीसरा वह होता है जो अत्यन्त उग्र और अशान्त होता है और धार्मिक उन्माद को शान्त करता है। इस तीसरे प्रकार के संगीत को ही अरस्तुने 'विरेचक' कहा है। इसका भावात्मक परिणाम है 'निर्दोष आनन्द'. धार्मिक उन्माद के कारण को ऐसा संगीत शान्त करता है।

विरेचन की नीतिपरक व्याख्या का श्रेय जर्मनी के बार्नेज को दिया जाता है। उनके अनुसार "मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विरेचन का अर्थ हुआ करुणा और भय नामक मनोवेगों की उत्तेजना द्वारा सम्पन्न, अन्तर्वृत्तियों का समंजन अथवा मन की शान्ति और परिष्कृति।" (पाश्चात्य साहित्य-चिन्तन – निर्मला जैन, पृ. 60) अरस्तुके शब्दों में कहा जाय तो शुद्धि के अनुभव का अर्थ है आत्मा की विशदता और प्रसन्नता। रैने वेलक ने बार्नेज की इस व्याख्या का खण्डन किया है।[6,7,8]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 6, June 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0706113 |

विरेचन की व्याख्या करते हुए यह कहा गया कि त्रासदी द्वारा उत्पन्न भय और करुणा उत्तेजित होकर दूसरी भीषण वासनाओं जैसे, क्रोध आदि को शान्त कर देते हैं। इस बात का प्रभाव व्यक्ति के आचार और नैतिकता पर पड़ता है. कई विचारकों ने यह भी मत दिया कि भय और करुणा के भावों के, त्रासदी में प्रदर्शन द्वारा, दर्शकों के मन में रहने वाले इन्हीं भावों का, निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर विरेचन हो जाता है। इससे व्यक्ति की नैतिकता उदात्त हो जाती है।

IV. निष्कर्ष

विरेचन से अरस्तुका ठीक-ठीक क्या अभिप्राय था, यह पता न होने के कारण विरेचन की कई व्याख्याएं हुई हैं। प्रो. निर्मला जैन ने अनुमान लगाया है कि अरस्तुके "काव्य-चिन्तन का एक केन्द्रीय सरोकार यह था कि प्लेटो द्वारा लगाये गये आक्षेपों के विरुद्ध काव्य का पक्ष-समर्थन कर सकें। उसके (काव्य के) पक्ष में दलीलें प्रस्तुत कर सकें।" (पाश्चात्य साहित्य-चिन्तन – निर्मला जैन, पृ. 63)

करुणा और भय मन को सुख देने वाले भाव नहीं होते हैं। फिर कविता और नाटक में आने के बाद ये भाव दर्शक या पाठक को आनन्द कैसे देते हैं? इस मत पर काफी वाद-विवाद चला । अरस्तुने भी इस प्रश्न का कोई ठीक-ठीक जवाब नहीं दिया। लेकिन विरेचन से सम्बन्धित अरस्तुकी अवधारणाओं को जानने के बाद यह कहा जा सकता है कि "वास्तविक जीवन में करुणा और भय के भाव दुख से संवलित अवश्य होते हैं किन्तु कलात्मक प्रक्रिया के वैशिष्ट्य के कारण दुखद अंश विलुप्त हो जाता है और शुद्ध आनन्द बचा रहता है।" (पाश्चात्य काव्यशास्त्र – देवेन्द्रनाथ शर्मा, पृ. 59-60)

शोधन या विरेचन का साहित्यिक स्वरूप क्या हो, अरस्तुइस पर चुप हैं। अपने लेखन में कहीं भी उन्होंने इसका कोई संकेत नहीं किया है। उनके लेखन से सिर्फ इतना ही पता चलता है कि विरेचन द्वारा वे किसी कष्टप्रद या अशान्तिप्रद तत्त्व की ओर इशारा करना चाहते हैं। अपने शासनशास्त्र ग्रन्थ में इस शब्द की जो परिभाषा उन्होंने दी है, उससे विद्वानों की इस धारणा की पुष्टि होती देखी जा सकती है। अरस्तुके अनुसार, "भय घातक या कष्टकर आसन्न अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न एक प्रकार की पीड़ा है।" (पाश्चात्य काव्यशास्त्र – देवेन्द्रनाथ शर्मा, पृ. 57) इस परिभाषा में तीन बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। पहली यह कि अनिष्ट ऐसा हो जो घातक प्रतीत होता हो। दूसरी यह कि वह आसन्न हो और तीसरी यह कि उसका प्रभाव हम पर ही पड़नेवाला हो।

इसी तरह "करुणा घातक या कष्टकर अनिष्ट से उत्पन्न एक प्रकार की पीड़ा है, जिसका सम्बन्ध ऐसे व्यक्ति से होता है जो वस्तुतः उसका पात्र नहीं होता; जैसे सत्य हरिश्चन्द्र नाटक में राजा हरिश्चन्द्र और रानी शैव्या को कष्ट सहते देख हम करुणा से भर जाते हैं। अपने ऊपर या किसी अत्मीय के ऊपर इस अनिष्ट के निकट भविष्य में घटित होने की हमें आशंका बनी रहती है।" (वही, पृ. 57) मानना चाहिए कि अरस्तुके अनुसार करुणा और भय, दोनों ही पीड़ादायक भाव है। त्रासदी या काव्य हमारे इन्हीं भावों का विरेचन करने की कोशिश करते हैं।

अरस्तुका कहना है कि वस्तुत: भावों का दमन हितकर नहीं हानिकर है। उन्हें[4,5,6] दमित करने के बदले सन्तुलित रखना वांछनीय और आवश्यक है। दुखान्तक भावों का उद्रेक करता है, वह उद्रेक स्थायी नहीं होता किन्तु भावों में सामंजस्य और सन्तुलन आता है। मन एक प्रकार की आनन्दप्रद विश्रान्ति का अनुभव करने लगता है। इससे भावात्मक रुग्णता दूर हो जाती है।

यह व्याख्या होम्योपैथी के अनुकूल है जिसका सिद्धान्त है – सम: समं शमयति। करुणा और भय के भाव उद्रिक्त होकर मन में विद्यमान करुणा और भय का शमन कर देते हैं, जिससे मन पहले की अपेक्षा स्वस्थ हो जाता है। वास्तविक जीवन में करुणा और भय के भाव दुःख से संवलित अवश्य होते हैं, किन्तु कलात्मक प्रक्रिया के वैशिष्ट्य के कारण दुखद अंश विलुप्त हो जाता है और शुद्ध आनन्द बचा रहता है।

विरेचन से केवल भावनात्मक शान्ति ही नहीं मिलती, बल्कि भावों का परिष्कार भी होता है, भले ही वह अस्थायी हो। डॉ. नगेन्द्र का कथन है कि सफल त्रासदी का चमत्कार मूलत: रागात्मक है, यह विरेचन प्रक्रिया द्वारा भावों को उद्बुद्ध करती है, उनका समंजन करती है और इस प्रकार आनन्द की भूमिका प्रस्तुत करती है। यही विरेचन सिद्धान्त की महत्त्वपूर्ण देन है। यदि ऐसा न होता और त्रासदी केवल भावों को विक्षुब्ध करके छोड़ देती तो प्रेक्षक समय और धन खर्च कर त्रासदी देखने क्यों जाते?

हालांकि कई लोगों ने इस पर प्रश्न भी उठाया है। देवेन्द्रनाथ शर्मा का मत है कि "दुखान्तक देखने के बाद ऐसा तो होता नहीं कि क्लेशकर भावों से मनुष्य हमेशा के लिए मुक्त हो जाय; यदि ऐसा होता तो नाटक नैतिक सुधार का सर्वोत्तम साधन बन जाता; जेलों की जगह नाट्यशालाएँ ले लेतीं।" इसलिए कहना चाहिए कि विरेचन से "स्थायी भाव-परिष्कार तो नहीं होता पर तात्कालिक अवश्य होता है।" (पाश्चात्य काव्यशास्त्र – देवेन्द्रनाथ शर्मा, पृ. 60) यही विरेचन की सार्थकता है। कहना उचित होगा कि अपनी कमियों और क्षमताओं के साथ विरेचन सिद्धान्त पाश्चात्य काव्यशास्त्र को अरस्तुकी उल्लेखनीय देन है।[10]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 6, June 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0706113 |

संदर्भ

1) साहित्य सिद्धान्त,रामअवध द्विवेदी,बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना
2) यूनानी और रोमी काव्यशास्त्र, कृष्णदत्त पालीवाल, सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली
3) पाश्चात्य काव्यशास्त्र,देवेन्द्रनाथ शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली
4) पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा,डॉ.नगेन्द्र(संपा.), दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली
5) पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास,ताकरनाथ बाली, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली
6) The Aristotelian Catharsis, (article), The Philosophical review, Vol. 35, N0. 4, July 1926, Allan H. Gilbert, Duke University Press.US.
7) Works of Aristotle, Aristotle, Cambridge University Press, Cambridge, London.
8) Aristotle's Poetics, Stephen Halliwell, Gerald Duckworth, London.
9) The Basic Works of Aristotle, edited by Richard McKeon, Random House, New York.
10) Aristotle's politics and poetics, Benjamin Jowett, The Viking Press, New York.

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com